पुस्तकालय

जिलेट नैरेटिव — नांदो, लेखक

gillettenarrative.com

लॉरियल के अनुभव से मैं समझ गया कि मैं अब तक एक जिलेट के साँचे के भीतर जी रहा था, और वह असली बाज़ार से एक जैसा नहीं था — और अगर कभी मैं ख़ुद को किसी कॉर्पोरेट माहौल से बाहर पाता, तो मैं दुनिया का सामना करने के लिए बिलकुल तैयार नहीं होता।

मेरे पिता ने फ़ोन किया और मुझे दोपहर के भोजन पर बुलाया — घर पर नहीं, हम बाहर मिलने वाले थे, मानो यह बस कोई कामकाजी मुलाक़ात हो, जबकि असल में हम अपना सबसे अच्छा वक़्त साथ बिता रहे होते, पिता और बेटा फिर से एक-दूसरे को पा रहे होते। मुझे उनकी कमी खलती है।

वह जानना चाहते थे कि इस पेशेवर अनुभव के बाद मैं कैसा महसूस कर रहा हूँ — उन्हें ब्योरे या तफ़सील नहीं चाहिए थे, वह हमेशा से एक कम बोलने वाले इंसान रहे, वह कभी कुछ पूछते नहीं थे, बस सुनते और मुस्कुराते थे।

मैंने उन्हें बताया था कि मैं पढ़ना चाहता हूँ — स्कूल या विश्वविद्यालय के ज़रिए नहीं, बल्कि किसी पुस्तकालय में जाकर, दिन-ब-दिन यह टटोलते हुए कि किताबें क्या कहती हैं।

वह इससे ख़ुश हुए और बोले: संस्कृति सिर्फ़ अनुभव से नहीं आती — यह याद रखना कि इतिहास हमेशा ख़ुद को दोहराता है, वही चक्र बार-बार, बस तुम्हें उसे एक बार पढ़ना है और समझना है कि वह कैसे चलता है।

थोड़े शब्द, कोई नाटकबाज़ी नहीं — यह आज भी मेरे होने का एक हिस्सा है। व्यंग्य का यह मिज़ाज मुझे अपनी माँ से मिला, जो असल में मेरे नाना से विरासत में आया एक गुण है।

पर मुझे हमेशा अपनी भाषा उसी के हिसाब से ढालनी होती, जिससे मैं बात कर रहा होता, क्योंकि कोई मुश्किल शब्द अक्सर संस्कृति का सबूत होता ही नहीं — वह तो बस आपको एक ऐसा जाहिल मूर्ख साबित कर देता है जिसे पता ही नहीं कि वह किस बारे में बक रहा है।

मैंने सोचा कि मिलान जाकर कोई कैसर मैनेजमेंट कोर्स कर लूँ, पर वे 37,60,000 लीरा माँग रहे थे, और पाठ्यक्रम पूरा पढ़ने के बाद मुझे यक़ीन नहीं हुआ कि यह निवेश के लायक़ है।

मैं दूसरों के ज्ञान के आगे ख़ुद को परखना चाहता था, और मुझे मिल गया कि क्या करूँ: एक मर्चेंडाइज़र कोर्स, जहाँ मैं जो पहले से व्यवहार में करता था उसे सिद्धांत की बुनियाद देकर तराश सकता और और बेहतर बना सकता था।

मैंने हफ़्ते में बीस घंटे की कक्षाओं के लिए 6,50,000 लीरा चुकाए — पर वह कैसा रहा, यह मैं तुम्हें अगली कड़ी में बताऊँगा।

बस एक ख़याल: उस वक़्त भी मुझे यह अहसास होने लगा था कि मेरे भीतर कुछ ठीक से काम नहीं कर रहा, या शायद बिलकुल ठीक ही काम कर रहा था, पर मैं बता नहीं पाता था कि वह क्या है। बाद में लिखना ही था जिसने यह सब साफ़ कर दिया।

मैं वह इंसान था जिसके होने की किसी को उम्मीद तक नहीं थी — और फिर भी, मैं कोई था।

फर्दिनांदो

आर्काइव | फर्दिनांदो फ्रेगा — नांदो, लेखक | © 2026 Gillettenarrative.com. सर्वाधिकार सुरक्षित।